चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	1-6-24	2	2-6

The Tribune

HAU gets patent for paddy thresher machine

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, MAY 31

Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Hisar, scientists have made another achievement as an integrated paddy thresher machine, with dryer, de-husker and polisher, developed by the scientists of the university has received a patent from the Patent Office of the Government of India.

Haryana Agriculture University scientists with the paddy thresher machine. TRIBUNE PHOTO

Sharing the information, a university spokesperson said the machine developed by the scientists of the College of Agricultural Engineering and Technology would prove to be beneficial for the farmers. The machine was invented by Dr Mukesh Jain, Department of Farm Machinery and Power Engineering; Dr Kanchan K Singh, former ADG of ICAR; and Professor Satya of IIT-Delhi. The machine has received the certificate from the Government of India, with the patent number-536920.

Vice Chancellor BR Kamboj congratulated all the scientists on being awarded the patent for the development of a new technology. He added that now, farmers would be able to detach paddy grains from the crop, dry de-husk (for brown rice), and polish (for white rice) using the machine on the fields itself.

Earlier, farmers had to go to the mill to extract rice from paddy. There was no such machine for extracting rice in the agricultural field. Now, farmers would be able to produce brown rice for their own consumption as well.

Brown rice has more nutrients than white rice as it does not go through any refining or polishing process, providing an adequate amount of calories to the body. It is also a good source of fibre, vitamins and minerals. Besides, keeping bones healthy, diabetes and weight under control, it also increases immunity.

Dean College of Agricultural Engineering and Technology, Dr SK Pahuja, said the machine is suitable for a 50 HP tractor. The dryer includes 18 ceramic infrared heaters (650W each). The rice production capacity of this machine reaches 150 kg/hour. The price of the machine is Rs 6 lakh.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	1-6-24	5	1-2

भारत में 1.17 करोड़ से अधिक पाठक [IRS 2019]

पंजाब केसरी

PUNJAB KESARI HISSAR

हकृवि की धान थ्रैशर मशीन को मिला पेटैंट

किसानों को पहले मिल में जाना पड़ता था, अब खेतों में ही निकाल सकेंगे मशीन से चावल

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ पेटैंट प्राप्त करने वाली टीम व अधिकारी।

हिसार, 31 मई (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रैशर मशीन को भारत सरकार के पेटैंट कार्यालय की ओर से पेटैंट मिल गया है। विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह मशीन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी।

मशीन का आविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डा. मुकेश जैन, आई.सी.ए.आर. के पूर्व ए.डी.जी. डा. कंचन के. सिंह और आई.आई.टी. दिल्ली की प्रोफैसर सत्या की अगुवाई में किया गया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से इसका प्रमाण-पत्र मिल गया है, जिसकी पेटैंट संख्या 536920 है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय को लगातार मिल रही

इस नई तकनीक के लिए पेटैंट मिलने पर उन्होंने सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि इस तरह की तकनीकों के विकास में सकारात्मक प्रयासों को विश्वविद्यालय हमेशा प्रोत्साहित करता रहता है। उन्होंने कहा कि चावल मुख्य खाद्य पदार्थों में शामिल है। अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सुखा सकेंगे। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था। अभी तक खेत में ही चावल निकालने की कोई मशीन नहीं थी। अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राऊन राइस निकाल सकेंगे।

धान थ्रैशर की मुख्य विशेषताएं: कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एस.के. पाहूजा ने बताया कि यह मशीन 50 एच.पी. ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारैड हीटर (प्रत्येक 650 वॉट) शामिल हैं। इस मशीन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	1-6-24	6	1-5

उपलब्धि • वीसी ने कहा - एचएयू को लगातार मिल रहीं उपलब्धियां वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का ही नतीजा

एचएयू के विकसित धान थ्रेशर मशीन को मिला पेटेंट

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय से पेटेंट मिला है। मशीन का अविष्कार कॉलेज के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. मुकेश जैन, आईसीएआर के पूर्व एडीजी डॉ. कंचन के सिंह और आईआईटी दिल्ली की प्रोफेसर सत्या की अगुवाई में किया गया।

कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज ने कहा कि एचएयू को लगातार मिल रहीं उपलब्धियां यहां के वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का ही नतीजा है। उन्होंने कहा कि चावल लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थों में शामिल है। अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सुखा सकेंगे, भूसी निकाल सकेंगे भूरे चावल के लिए और पॉलिश कर सकेंगे सफेद चावल के लिए। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था। अभी तक खेत में ही चावल निकालने की कोई मशीन नहीं थी। अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राउन राइस भूरे चावल निकाल सकेंगे।

सफेद चावल की तुलना में इसमें ज्यादा पोषक तत्व होते हैं, क्योंकि यह किसी रिफाइन या पॉलिश प्रक्रिया से नहीं गुजरता। सिर्फ इसके ऊपर से धान के छिलके उतारे जाते हैं। इससे शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैलोरी मिलती है। साथ यह फाइबर, विटामिन और मिनरल्स का एक अच्छा स्रोत हैं। ब्राउन राइस खाने से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित रहता है।

हकृवि कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम व अधिकारीगण।

जानिए... धान थ्रेशर की मुख्य विशेषताएं

कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने बताया कि यह मशीन 50 एचपी ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारेड हीटर (प्रत्येक 650 वॉट) शामिल है। इस मशीन की चावल उत्पादन क्षमता 150 किलोग्राम/घंटा तक पहुंच जाती है। मशीन की कीमत 6 लाख रुपए है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजया रानी, डॉ. अमरजीत कालड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. अनिल सरोहा व श्याम सुन्दर शर्मा उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	1-6-24	1	1-4

उपलब्धि

विश्वविद्यालय के कुलपति ने दी बधाई, अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे

एचएयू के वैज्ञानिकों की धान थ्रेशर को मिला पेटेंट

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को पेटेंट मिल गया है।

विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित मशीन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। मशीन का आविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. मुकेश जैन, आईसीएआर के पूर्व एडीजी डॉ. कंचन के सिंह और आईआईटी दिल्ली की प्रो. सत्या की अगुवाई में किया गया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से प्रमाणपत्र मिल गया है, जिसकी पेटेंट संख्या 536920 है।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने पेटेंट मिलने पर कहा कि यह गौरव की बात है, ऐसी तकनीकों के विकास में सकारात्मक प्रयासों को विश्वविद्यालय हमेशा प्रोत्साहित करता रहता है। चावल लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थों में शामिल है। अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सूखा सकेंगे, भूसी निकाल सकेंगे (भूरे चावल के लिए) और पॉलिश कर सकेंगे (सफेद चावल के लिए)। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था।

एचएयू में कुलपति प्रो. कांबोज के साथ पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम। स्रोत : संस्थान

सफेद चावल की तुलना में भूरे में ज्यादा पोषक तत्व : उन्होंने कहा कि अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राउन राइस (भूरे चावल) निकाल सकेंगे। सफेद चावल की तुलना में इसमें ज्यादा पोषक तत्व होते हैं, क्योंकि यह किसी रिफाइन या पॉलिश प्रक्रिया से नहीं गुजरता। सिर्फ इसके ऊपर से धान के छिलके उतारे जाते हैं। इससे शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैलोरी मिलती है। साथ ही यह फाइबर, विटामिन और मिनरल्स का एक अच्छा स्रोत हैं। ब्राउन राइस खाने से कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रहता है। यह मधुमेह, वजन व हड्डियों को तंदरुस्त रखने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

धान थ्रेशर मशीन की विशेषताएं

कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने बताया कि यह मशीन 50 एचपी ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारेड हीटर (प्रत्येक 650 वॉट) शामिल है। मशीन की चावल उत्पादन क्षमता 150 किलोग्राम/घंटा तक पहुंच जाती है। मशीन की कीमत 6 लाख रुपये है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजया रानी, डॉ. अमरजीत कालड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. अनिल सरोहा व श्याम सुंदर शर्मा उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	1-6-24	3	1-4

एचएयू वैज्ञानिकों के विकसित धान थ्रेशर को मिला पेटेंट

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पालिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय की ओर से पेटेंट मिल गया है। कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह मशीन किसानों के लिए फायदेमंद साबित होगी।

आविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डा. मुकेश जैन, आइसीएआर के पूर्व एडीजी डा. कंचन के सिंह और आइआइटी दिल्ली की प्रोफेसर सत्या की अगुवाई में किया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से इसका प्रमाण-पत्र मिल गया है जिसकी पेटेंट संख्या 536920 है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि चावल लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थों में शामिल है। अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सूखा सकेंगे, भूसी निकाल सकेंगे (भूरे चावल के लिए) और पालिश कर सकेंगे (सफेद चावल के लिए)। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था। अभी तक खेत में ही चावल निकालने की कोई मशीन नहीं थी। अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राउन राइस (भूरे चावल) निकाल सकेंगे। इस अवसर पर ओएसडी डा. अतुल ढींगड़ा, फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डा. विजया रानी, डा. अमरजीत कालड़ा, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य, डा. अनिल सरोहा व श्याम सुंदर शर्मा उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज के साथ पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम व अधिकारीगण।

धान थ्रेशर की मुख्य विशेषताएं

महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एस के पाहुजा ने बताया कि यह मशीन 50 एचपी ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारेड हीटर (प्रत्येक 650 वाट) शामिल है। इस मशीन की चावल उत्पादन क्षमता 150 किलोग्राम-घंटा तक पहुंच जाती है। मशीन की कीमत 6 लाख रुपये है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	1-6-24	9	1-4

एचएयू वैज्ञानिकों द्वारा विकसित धान थ्रैशर को मिला पेटेंट

हिसार, 31 मई (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय की ओर से पेटेंट मिल गया है। विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह मशीन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। मशीन का अविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. मुकेश जैन, आईसीएआर के पूर्व एडीजी डॉ. कंचन के. सिंह और आईआईटी दिल्ली की प्रोफेसर सत्या की अगुवाई में किया गया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से इसका प्रमाण-पत्र मिल गया है जिसकी पेटेंट संख्या 536920 है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय को लगातार मिल रहीं उपलब्धियां यहां के वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का ही नतीजा हैं। विकसित की गई इस नई तकनीक के लिए पेटेंट मिलने पर उन्होंने सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि इस तरह की तकनीकों के विकास में सकारात्मक प्रयासों को विश्वविद्यालय हमेशा प्रोत्साहित करता रहता है। वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए उन्होंने भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयास जारी रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि चावल लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थों में शामिल है। अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सुखा सकेंगे, भूसी निकाल सकेंगे (भूरे चावल के लिए) और पॉलिश कर सकेंगे (सफेद चावल के लिए)। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था। अभी तक खेत में ही चावल निकालने की कोई मशीन नहीं थी। अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राउन राइस (भूरे चावल) निकाल सकेंगे। सफेद चावल की तुलना में इसमें ज्यादा पोषक तत्व होते हैं, क्योंकि यह किसी रिफाइन या पॉलिश प्रक्रिया से नहीं गुजरता। सिर्फ इसके ऊपर से धान के छिलके उतारे जाते हैं। इससे शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैलोरी मिलती है। साथ ही यह फाइबर, विटामिन और मिनरल्स का एक अच्छा स्रोत हैं। ब्राउन राइस खाने से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित रहता है। यह मधुमेह, वजन तथा हड्डियों को तंदरुस्त रखने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने बताया कि यह मशीन 50 एचपी ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारेड हीटर (प्रत्येक 650 वॉट) शामिल है। इस मशीन की चावल उत्पादन क्षमता 150 किलोग्राम/घंटा तक पहुंच जाती है। मशीन की कीमत 6 लाख रूपए है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजया रानी, डॉ. अमरजीत कालड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. अनिल सरोहा व श्याम सुन्दर शर्मा उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम व अधिकारी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	1-6-24	3	3-5

एचएयू वैज्ञानिकों की उपलब्धि

विकसित धान थ्रेशर को मिला पेटेंट

हिसार, 31 मई (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय की ओर से पेटेंट मिल गया है।

विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह मशीन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। मशीन का अविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. मुकेश जैन, आईसीएआर के पूर्व एडीजी डॉ. कंचन के. सिंह और आईआईटी दिल्ली की प्रोफेसर सत्या की अगुवाई में किया गया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से इसका प्रमाण-पत्र मिल गया है जिसकी पेटेंट संख्या 536920 है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय को लगातार मिल रहीं उपलब्धियां यहां के वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का ही नतीजा हैं। विकसित की गई इस नई तकनीक के लिए पेटेंट मिलने पर उन्होंने सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजया रानी, डॉ. अमरजीत कालड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. अनिल सरोहा व श्याम सुन्दर शर्मा उपस्थित रहे।

ये है विशेषता

-कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने बताया कि यह मशीन 50 एचपी ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारेड हीटर (प्रत्येक 650 वॉट) शामिल है। इस मशीन की चावल उत्पादन क्षमता 150 किलोग्राम/घंटा तक पहुंच जाती है। मशीन की कीमत 6 लाख रूपए है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	31.05.2024	--	--

एचएयू वैज्ञानिकों द्वारा विकसित धान थ्रेशर (मशीन) को मिला पेटेंट

पल पल न्यूज: हिसार, 31 मई। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय की ओर से पेटेंट मिल गया है। विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह मशीन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। मशीन का अविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. मुकेश जैन, आईसीएआर के पूर्व एडीजी डॉ. कंचन के. सिंह और आईआईटी दिल्ली की प्रोफेसर सत्या की अगुवाई में किया गया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से इसका प्रमाण-पत्र मिल गया है जिसकी पेटेंट संख्या 536920 है। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय को लगातार मिल रहीं उपलब्धियां यहां के वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का ही नतीजा हैं। विकसित की गई इस नई तकनीक के लिए पेटेंट मिलने पर उन्होंने सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि इस तरह की तकनीकों के विकास में सकारात्मक प्रयासों को विश्वविद्यालय हमेशा प्रोत्साहित करता रहता है। वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए उन्होंने भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयास जारी रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि चावल लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थों में शामिल है। अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सुखा सकेंगे, भूसी निकाल सकेंगे (भूरे चावल के लिए) और पॉलिश कर सकेंगे (सफेद चावल के लिए)। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था। अभी तक खेत में ही चावल निकालने की कोई मशीन नहीं थी। अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राउन राइस (भूरे चावल) निकाल सकेंगे। सफेद चावल की तुलना में इसमें ज्यादा पोषक तत्व होते हैं, क्योंकि यह किसी रिफाइन या पॉलिश प्रक्रिया से नहीं गुजरता। सिर्फ इसके ऊपर से धान के छिलके उतारे जाते हैं। इससे शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैलोरी मिलती है। साथ ही यह फाइबर, विटामिन और मिनरल्स का एक अच्छा स्रोत हैं। ब्राउन राइस खाने से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित रहता है। यह मधुमेह, वजन तथा हड्डियों को तंदरुस्त रखने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

धान थ्रेशर की मुख्य विशेषताएं- कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि यह मशीन 50 एचपी ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारेड हीटर (प्रत्येक 650 वॉट) शामिल है। इस मशीन की चावल उत्पादन क्षमता 150 किलोग्राम/घंटा तक पहुंच जाती है। मशीन की कीमत 6 लाख रूपए है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजया रानी, डॉ. अमरजीत कालड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. अनिल सरोहा व श्याम सुन्दर शर्मा उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	31.05.2024	--	--

एचएयू वैज्ञानिकों द्वारा विकसित ड्रायर, डी हस्कर व धान थ्रेशर मशीन को मिला पेटेंट

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय की ओर से पेटेंट मिल गया है। विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह मशीन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। मशीन का अविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. मुकेश जैन, आईसीएआर के पूर्व एडीजी डॉ. कंचन के. सिंह और आईआईटी दिल्ली की प्रोफेसर सत्या की अगुवाई में किया गया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से इसका

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम व अधिकारीगण

प्रमाण-पत्र मिल गया है जिसकी पेटेंट संख्या 536920 है।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सुखा सकेंगे, भूसी निकाल सकेंगे (भूरे चावल के लिए) और पॉलिश कर सकेंगे (सफेद चावल के लिए)। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था। अभी तक खेत में ही चावल निकालने की कोई मशीन नहीं थी। अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राउन राइस (भूरे चावल) निकाल सकेंगे।

कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस के पाहुजा ने बताया कि यह मशीन 50 एचपी ट्रैक्टर के लिए अनुकूल है। ड्रायर में 18 सिरेमिक इन्फ्रारेड हीटर (प्रत्येक 650 वॉट) शामिल है। इस मशीन की चावल उत्पादन क्षमता 150 किलोग्राम/घंटा तक पहुंच जाती है। मशीन की कीमत 6 लाख रूपए है। सफेद चावल की तुलना में इसमें ज्यादा पोषक तत्व होते हैं, क्योंकि यह किसी रिफाइन या पॉलिश प्रक्रिया से नहीं गुजरता। सिर्फ इसके ऊपर से धान के छिलके उतारे जाते हैं। इससे शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैलोरी मिलती है। साथ ही यह फाइबर, विटामिन और मिनरल्स का एक अच्छा स्रोत हैं। ब्राउन राइस खाने से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित रहता है। यह मधुमेह, वजन तथा हड्डियों को तंदरुस्त रखने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

इस अवसर पर डॉ. अतुल ढींगड़ा, फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजया रानी, डॉ. अमरजीत कालड़ा, डॉ. संदीप आर्य, डॉ. अनिल सरोहा व श्याम सुन्दर शर्मा उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
रमा टाइम्स न्यूज	31.05.2024	--	--

एचएयू वैज्ञानिकों द्वारा विकसित धान थ्रेशर (मशीन) को मिला पेटेंट

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के साथ पेटेंट प्राप्त करने वाली टीम व अधिकारीगण।

हिसार(रा.न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एक और उपलब्धि को विश्वविद्यालय के नाम किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई ड्रायर, डी हस्कर और पॉलिशर के साथ एकीकृत धान थ्रेशर मशीन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय की ओर से पेटेंट मिल गया है। विश्वविद्यालय के कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित यह मशीन किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित होगी। मशीन का अविष्कार महाविद्यालय के फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग के डॉ. मुकेश जैन, आईसीएआर के पूर्व एडीजी डॉ. कंचन के. सिंह और आईआईटी दिल्ली की प्रोफेसर सत्या की अगुवाई में किया गया। इस मशीन को भारत सरकार की ओर से इसका प्रमाण-पत्र मिल गया है जिसकी पेटेंट संख्या 536920 है।

वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का नतीजा है विश्वविद्यालय की उपलब्धियां : प्रो. बी.आर. काम्बोज

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय को लगातार मिल रहीं उपलब्धियां यहां के वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत का ही नतीजा हैं। विकसित की गई इस नई तकनीक के लिए पेटेंट मिलने पर उन्होंने सभी वैज्ञानिकों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही गौरव की बात है कि इस तरह की तकनीकों के विकास में सकारात्मक प्रयासों को विश्वविद्यालय हमेशा प्रोत्साहित करता रहता है। वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए उन्होंने भविष्य में भी इसी प्रकार निरंतर प्रयास जारी रखने की अपील की। उन्होंने कहा कि चावल लोगों के मुख्य खाद्य पदार्थों में शामिल है। अब किसान खेत में ही मशीन का उपयोग करके धान के दानों को फसल से अलग कर सकेंगे, सुखा सकेंगे, भूसी निकाल सकेंगे (भूरे चावल के लिए) और पॉलिश कर सकेंगे (सफेद चावल के लिए)। पहले किसानों को धान से चावल निकालने के लिए मिल में जाना पड़ता था। अभी तक खेत में ही चावल निकालने की कोई मशीन नहीं थी। अब किसान अपने घर के खाने के लिए भी ब्राउन राइस (भूरे चावल) निकाल सकेंगे। सफेद चावल की तुलना में इसमें ज्यादा पोषक तत्व होते हैं, क्योंकि यह किसी रिफाइन या पॉलिश प्रक्रिया से नहीं गुजरता। सिर्फ इसके ऊपर से धान के छिलके उतारे जाते हैं। इससे शरीर को पर्याप्त मात्रा में कैलोरी मिलती है। साथ ही यह फाइबर, विटामिन और मिनरल्स का एक अच्छा स्रोत हैं। ब्राउन राइस खाने से कोलेस्ट्रोल नियंत्रित रहता है। यह मधुमेह, वजन तथा हड्डियों को तंदरुस्त रखने के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

इस अवसरपर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, फार्म मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग विभाग की अध्यक्ष डॉ. विजया रानी, डॉ. अमरजीत कालड़ा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, डॉ. अनिल सरोहा व श्याम सुन्दर शर्मा उपस्थित रहे।